

DPN 5962

Title: पूर्णमासी व्रतविधि PURNIMASI VRATA VIDHI

Run. No. 6653

Cat. No.

Micro. No.

Subject ~~विधि~~ Religious ritual Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / नेपालभाषा: सर्व व विधि (द) New meaning of direction.

Size in cms. 17.5 X 7.3 Folios 43 Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

missing 8, 26, 27, 36-38
Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor फणीन्द्र रत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place Phaxindon Ratan vajra charya

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
ॐ नमः श्री गुरु साखाय ॥ नमः गुरु साखुल, देगुरी, कलेस न्याहा, जेल भावना धुंडाव
दहा जिम्मा ॥ ॥

Hyatt 2015 / Colaptes

" " Bunt-Blau
-Gelb rot grün gelb

$$\frac{\sqrt{13} - \sqrt{10}}{2}$$

11

2

पूरामासी व्रतविधि

पूजा विधि

प्रणीन्द्रस्त वज्राचार्य

ॐ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
 नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
 नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
 नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
 नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥

हाकि याग रागा टिकि
यन्न लाचना समा यन्न वेचन
मूटिक मयं सवा यद्विन मन्य

लक्ष्मणमायन्नं सलीलं सखनदीवलधनं नारदप्रथमस्योक्तं समुद्यम	उपस्थितं समानितं स्नानसत्वं जय
त्वं विशाखा नमिन्नुद्वीः	मयसत्वं हृमिन्नुद्वीः यदध्यासि
दिदानयनं सनं डं वदसः	दियं चायदायदा ॥ ॥ जायय
सिंशः ॥ शिवना ॥ यथा	॥ स्वस्तिवाक्ययुता ॥
यथमनुना ॥ ॥ डं आः वदनाय हृत्वादा ॥	

ऊवस्मिन्मानिर्गच्छानसत्त्वं जय
 मयसत्त्वं हस्मिन्स्वायदथाजि
 दियंवायदायज्जा॥ ॥ जायज
 र्हत्वादा॥ ॥ स्वस्मिन्वायज्जा

न जायथादायनाकदात ॥ ॥ उं वज्रवृणमदानागाधियन ॥ ॥ ॥
 उम्वदीयवर्षीयय ॥ ॥ न हं खादा ॥ ॥ यथाः यलाः य
 मुनि ॥ १ ॥ यव अन ॥ ॥ ककनकमयं क मला क मृदाः ॥
 नं मिना जानय क मय ॥ ॥ रुना एक मखं द्वि रु उ रु मा ऊ
 लिनं ना रु व थ रु जा गा का वं उ य मि न न थ म हि स म य स त्व म

मं लान स त्वं जयादिना सं भा थ न न व लिनं चि क थ रु ॥ यथादि
 यूजा ॥ जाय ॥ अन का यः ॥ ॥ हं खादा ॥ उं अन क मदाना गा धि
 यन ॥ ॥ उम्वदीयवर्षी ॥ ॥ यय ॥ खादा ॥ यः लाः यः मु नि
 ॥ १ ॥ द क्रि य म ला ॥ ॥ ठि क म यं दी व त्स ला ऊ नं ला य
 स क रु ना उ द द मृ ना ल स त्व हं द्वि रु उ क म खं रु माः ड लिनं

रुद्रधः रुद्रगोकात्रं डयविमनश्चं समयसत्वं तत्समज्ञानस
 त्वं मद्योदिकं दत्वा नः नैवलिनं चिन्तय नूयथादिः
 यजा ॥ डयमायकं स्वाभ दा ॥ यजामनु ॥ डयममदा ॥ ३
 नागमधियनः ॥ रुद्रधः दीयवधोयय ॥ स्वादा ॥ यः ना
 ॥ द्यः शुनि ॥ ३ ॥ यधि मरु रुकं गात्रमयं नदावलाकमि

वसफरुनं डं रुद्रकं दिशु डीकमत्वं रुद्रा डलिनं ना रुद्रधस
 योकात्रं डयविमनश्चं समयसत्वं विराचा तत्समज्ञान
 सत्वं मद्योदिकं दत्वा नः नैवलिनं चिन्तय नूयथादिः
 ॥ डयमायकं स्वादा दा ॥ यजामनु ॥ डयममदानाग
 धियनः ॥ रुद्रधः दीयवधोयय ॥ स्वादा ॥ यः नाः द्यः शुनिशा

७ ॥ डरुव वासकिनं सफरुमि रंगमयं लिङ्गललादिम मि
 यदप्रिमा रुं दिरुडेका मेखेरुमा ऊनं नारुवधं सवो
 का नं डयविमनयं स मयसखं मत्समं हानसखं ७
 येननेवलीनं चिन्नेयम् ॥ एथादिष्ट ॥ डंभाः वासकि
 नेहृखासा ॥ एजा मरु ॥ डंभाः वासकिना गधियनं ॥ ८ ॥ डंभा
 मेदा ॥

द्विथवषोयय २ खासायं ॥ ला १ धं १ शुक्ति ॥ १ ॥ जालयासं
 खवालसीसक मयं ख रिक्काकसीधे सफरुहं यीनं दि
 रुडेका मखं रुमा ऊलि ननारुवधं यन्नगा का नं डय
 विनवययं स मयसखं मत्समं हानसखं मयनेव
 लीनं चिन्नेयम् ॥ एथादिष्ट ॥ डंभाः सखयालाय हृखासाय

त्रिमनश्च समयसत्वं गत्स मं ह्मन सत्वं अथेगुवलीनं विनयम्
 ॥ एव्यादिएजा ॥ डंआः ॥ कलिकाहं स्वाहा ॥ एजा मरु ॥
 डं कलिक मदाना गाधि यनं ॥ ६ ॥ दृज म्बुदियव घो यय १ ६
 स्वाहा ॥ यः लाः यः शुक्ति ॥ ६ ॥ ॥ ॥ आद्या मरु मय १
 यमय नीला लला कीन शिव मय रुपा वान वा वल्लो द्विभुजं का

मूर्खं रुगां डलिनारु प्रथमुज गंडय त्रिमनश्च समयसत्वं गत्स
 मं ह्मन सत्वं अथेगुवलीनं विनयम् ॥ एव्यादिएजा
 ॥ डंआः मदाय घाहं स्वाहा ॥ एजा मरु ॥ डंआः मदायः
 म्म मदाना गाधिय मं ॥ दृज म्बुदियव घो यय १ स्वाहा ॥
 यः लाः यः शुक्ति ॥ ॥ गवा वलिदाय य ॥ वा म वा व रुपा का

वनदक्षिणवप्रदाहिनयनयसाये॥मनकवासकि नरुक्क कः
 कोटक यम महाय प्र स्रं खयात्र कलिक वन ए नावदव
 मी महादेवमि सोमप्रिधि महासिखि दधुधन महादधुधन
 व मयवात्र हल १ नंदायः नेद सागल महासागत्र मनवः
 नं क महा न क शी कानि महा कानि सत्रय महा सत्रय रुडादि

१६ न मा व द्वाय ॥ ॥ पूर्व मा सि व रु न क स उ न म उ ल द न क व
 लि वि थ क ॥ ॥ वृ ह रा उः ॥ ॥ रा द ग न थि र्थ न म रु ॥ ॥
 १६ न मा रु ग व ल्य वे वा व न रु ॥ ॥ पु र्व क रा जा य र था ग रा या द नः
 स म्प स व द्वाय ॥ ॥ ग द्वा थ ॥ ॥ १६ स १ स म य १ सा न द न स मा
 रा य रु सा हि न नि वी न न नि रा क व न म द्वा न जा स र्व व द्वा ना वि था

नाधिष्ठितस्वादा ॥ ॥ सनातनाय च यथायदा नृपजा स्वानवाः
 यको ॥ ॥ उर्वलाचनाः यवजपुष्यं यमिष्टु स्वादा ॥ उं
 कात्यायवजपुष्यं यमिष्टु स्वादा ॥ उं नत्तसंरुवायवजपुष्यं २
 यमिष्टु स्वादा ॥ उं नत्तसंरुवायवजपुष्यं २
 जमाद्यसिद्धिश्च वजपुष्यं यमिष्टु स्वादा ॥ उं लाचनाय वजपुष्यं यमि

दृष्टादा ॥ उं मासकिथ वजपुष्यं यमिष्टु स्वादा ॥ उं याउनाय वजपुष्यं
 यमिष्टु स्वादा ॥ उं नात्रायः वजपुष्यं यमिष्टु स्वादा ॥ ॥
 नेशदधिविवाधनिमनः समसं द्यायथैत्यरुनादसकानन
 का ॥ ॥ नमस्तु सवेमुनः यानां जिनधामुकरंधका सर्ववः
 द्वात्रयं यथधम्मो धामुनममुता ॥ ॥ धमवद्धमउलदनकोमकु

॥ ॐ वज्रलक्ष्मि सत्रं कृत्वा ॥ ॥ स्तुतवाचकं ॥ ॥ ॐ वज्र
 वनाय वज्रयष्टं यमिष्टु
 मिष्टु स्तुता ॥ ॐ वज्रसंस्तु
 ॐ समिन्ताय वज्रयष्टं
 य वज्रयष्टं यमिष्टु स्तुता ॥ ॐ लावनाय वज्रयष्टं यमिष्टु स्तुता ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यं जा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ना॥ ॥निश्चयनंदमयया॥ ॥ॐ मंदिवसमयादाय॥ ॥धनि
 याथदिनम॥ ॥जावदाः ॥ ॥गवत्रम॥ ॥वाधिमलु
 लनित्वंदगा॥ ॥गथा ॥ गमसंगलत्वमइवव॥ ॥रुः ११
 गवर्कं॥ ॥रुगवकसक ॥ ॥माहाकालनिकं॥ ॥कल
 नावकस्कमदा॥ ॥सर्वरुसर्वदधिमं॥ ॥गथागमनसमस्तः

सामविका॥ ॥ सर्ववेनाक्यानकां॥ ॥ समस्तमकुल्यभायकां॥
॥ अरुणकायकां॥ ॥ जनगमुक्तजनशायकान्माचर
कमजिव॥ ॥ अनुरक्त
दृष्टा॥ ॥ सत्तनंगमुनि
नामगां॥ ॥ थथिध्वनथागतमस्त्रात्र॥ ० ॥ धनधर्ममउलदनका

॥ ॐ नमो भगवते धर्मसंयुक्तं सर्वविद्यानसाधकं चकार विमलं स्वा
दा ॥ ॥ स्नानवाचकः ॥ ॥ ॐ मायेऽप्युक्ता यात्र मिमांसा वरु
यष्ट्या यमिह स्वादा ॥ दानं ॥ ॐ माये गंधकदाय वरु यष्ट्या यः १२
मिश्रमित्राया वरु यष्ट्या यमिह स्वादा ॥ दानं ॥ ॐ द
स्वादा ॥ स्वामि ॥ ॐ समाधिना जाय वरु यष्ट्या यमिह स्वादा ॥ धनं ॥

ॐ लं का व ना ना य व ऊ य यं य नि दृ स्वा दा ॥ ऊ व स ॥ ॐ स ह न य गु लिः
 का य व ऊ य यं य नि दृ स्वाः ॥ दा ॥ ख व को न स ॥ ॐ न था ग न गु ह
 का य व ऊ य यं य नि दृ स्वा ह ॥ ॥ ख व को न थ व न ॥ ॐ ल लि न वि स्त
 ना य व ऊ य यं य नि दृ स्वा ह ॥ ॥ ऊ व को न थ व न ॥ ॐ सा य स व र्ण
 यं हा ख ना य व ऊ य यं य नि दृ स्वा दा ॥ ऊ व को न स ॥ ॥ यं था य दा वं य

[illegible]

॥ धर्मसूत्रं नंगद्यानि ॥ ॥ अर्थिं धर्मसूत्रं नंगद्यानि ॥ ० ॥
 धर्मं विमलमदल ॥ ॥ ॐ
 दार्कविमलखादा ॥ ॥
 नक्षत्राय वज्रयुष्यं यमिह
 यमिह खादा ॥ ॥ ॐ गगणगंजाय वज्रयुष्यं यमिह खादा ॥ ॥

वक्रकृ॥ ॥ जावदा॥ ॥ अथ वक्र॥ ॥ संघमंठलं निखंठनाह॥ ॥
 संघमंठलं खंठमंठव॥ ॥ ॥ अथ वक्रिका वाधिसखा॥ ॥ मंठिद
 वक्रनताउमावक्रिदवक्रन ॥ ॥ मथाह॥ ॥ संघमत्रवंगमि॥ ॥ १७
 संघमकंमलनवनग॥ ॥ ॥ नमायुष्टेवदायः॥ ॥ ॥ अथ वक्रुमः
 वाय॥ ॥ ॥ अथ मासाकंमनयखादा॥ ॥ ॥ ॐ मथावायखादा॥ ॥ ॥ ॐ श्रीनामवः

हं५
 खादा॥ ॥ ॐ वक्राकंमायखा॥ ॥ ॐ वक्रायखादा॥ ॥ ॐ मथायखादा॥ ॥
 ॐ ममत्राकमायखादा॥ ॥ ॐ ममत्राकमायखादा॥ ॥ ॐ ममत्राकमायखादा॥ ॥
 यखादा॥ ॥ ॐ अमिकंमथाः ॥ ॥ खादा॥ ॥ ॐ मंथीरुलनायखादा॥ ॥ ॐ
 ममायुष्टमनीयखादा॥ ॥ ॐ मवायविमाधनिहं॥ ॥ ॐ मध्वद
 किनहं॥ ॥ ॐ ममत्रमहं॥ ॥ ॐ मगनलावनिहं॥ ॥ ॐ मनाकंरुलानवनिहं

॥ उं मृगय रुहं ॥ उं चंद चंद रुहं चंद थोला कि निहं ॥ उं रुद वनि रुद य
नय हं ॥ उं काल निमदा रु
हं ॥ उं मरुथ क मोवल वि
सम रु रु द खा दा ॥ उं रु मि
मृ ग सि मा य खा दा ॥ उं मा दा य खा दा ॥ उं पु न व स व खा दा ॥ उं पु ष्या य

स्वादा ॥ ॐ मयथा य स्वादा ॥ ॐ मया य स्वादा ॥ ॐ पूवे स्वाद्यु न स्वादा ॥
 ॐ डरु स्वाद्यु न स्वादा ॥ ॐ दः स्वाद्यु स्वादा ॥ ॐ चिला य स्वादा ॥ ॐ
 स्वादि य स्वादा ॥ ॐ विस्वाया य स्वादा ॥ ॐ मनुत्राया य स्वादा ॥ ॐ
 ॐ स्वाद्यु स्वादा ॥ ॐ मूत्रा य स्वादा ॥ ॐ पूवे स्वाद्यु स्वादा ॥ ॐ डगाय
 स्वाद्यु स्वादा ॥ ॐ चिला य स्वादा ॥ ॐ धव स्वाद्यु स्वादा ॥ ॐ धन स्वाद्यु स्वादा ॥ ॐ

मरुविषाय स्वादा ॥ उं पुष्पकदाय स्वादा ॥ उं उरुदाय स्वादा ॥ उं व
 मि स्वादा ॥ उं मरुते स्वादा ॥ उं रुतन स्वादा ॥ ॥ उं उं दाय स्वा
 दा ॥ उं यमाय स्वादा ॥ उं व
 मरु स्वादा ॥ उं नेशय स्वा
 दा ॥ उं उं मनाय स्वादा ॥ उं उं व मरु स्वादा ॥ ॥ यं वायदाय पूज

॥ ॥ उं नमः समकवक्षानां सवेनथागमाद्यवलाकनि रत्र संरत्र
 हं हं स्वादा ॥ ॥ अद्य मरु
 नाहुवाय मरु मनाय मरु
 माय श्रीम मरु डाहुवाय क
 यविगाय हं सा नृदाय यवदानव कं राउ जक जाकिनी सदिगाय अव

मन्त्र जवन्त रत्नवान् मन्त्राना दिनाथाय ॐ दंयदमं ठलमखेम
 नृपविम्य ॐ दंमरु गयुद अक्षय दीयायदात्र वरिच प्रमिष्ट
 द्रुमानं मानमस्तु ग यस्यादि यमकम् नययिमी कथाद्रु गवनरु १७
 दानयमि धनयष्टि स मदा नां शान्तिं कृत्र यष्टिं कृत्र वदुमायः
 अय्ययमिष्टु स्वादा ॥ ॥ थात्रतामपूजायाचक धनिवाद्याय धनिमनरु

विद्यमानतन्त्रकमुनिः॥ तन्मस्तु निस्सथाधनमस्तु दिमाकरत्नः
 मस्तुकवायवपूरुचः॥ दूनभास्तुगं॥ ॥थनिधनदाडा
 वलिद्वियकवनिमागुरु॥ मस्तु॥ ॥डैनमारुगवनपूरुः
 चटलाकाश्वराय००भव
 यम्मेवष्टिप्तमदानां शक्तिंकवपूष्टिकवमस्तकार्यसिद्धिकाः

विष्वाक्ष्मा ॥ चन्द्रसिध्वं ह्यधनिमनविष्यद्विषम ॥ धनम
 उत्तमसंख्यकवादसच ॥ वृषादवयवाका सकसेनं खाननने
 ॥ शुभिः सायसका ॥ यथुय ॥ दधिसंख्यकवादसच ॥
 श्रीवादावर्तनं मन नमामि ॥ समिनंदनं संख्यकमनुयनं ॥
 चन्द्रनिमानाथं श्रीगं सप्तमलाहनं ॥ रुगाकचंदमासा विधकावाः

विषमसिः ख्यादिः ॥ समाकृतं पायनं ख्यादिः विमर्जन
 ॥ ॥ उंमविमर्जजादक ॥ आकासकां गुरुखादा ॥
 चयकवाद विमर्जन ॥ कुना ॥ मंडलयादवयादानसच
 यनजनदय खाननदय ॥ यावनयाय ॥ ॥ ॥ निपुर्ण
 मामिव ॥ विमर्जमाय ॥ ॥ ॥

हं नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ नमः स शुभं मंडलं सिद्धयर्थं च गवावि
 यः सिद्धयर्थं च मंडलं
 याय कथं स पूजा दामः
 धाज ॥ नमो कृष्णाय ॥
 शिवस्तदवमा ॥

विष्णुयसाकिं च च्छादा ॥ ॥ यं च धातुय उथ विदिता नमः ॥
 कामसिद्धयर्थं ॥ ॥ कं चः
 यासिद्धयर्थं च स्वसिद्ध
 प्रसिद्धयर्थं च स्वसिद्ध
 लं यं स मात्रं च स्वसिद्धयर्थं च स्वसिद्ध

यवप्रसक्ता गाय, याश्चंयमिथ दृष्ट्वा दा॥ ॥ लं खन दा य॥ ॥ उं मू
 यययवप्रसक्ता गाय, याश्चंयमिथ दृष्ट्वा दा॥ ॥ सं खन
 खन दा य॥ ॥ उं वरु नं मू ॥ ॥ मया लो यव द्यथ न ॥ उं सर्वे न ॥ २२
 थ ग न का य वि ह्म य न रू
 व कं च स नान ॥ ॥ यं चो य दा ल दृ षाः म धा ला ह्या ४ द्य ० वा द न द

शुक्तिः॥ ॥ अं ऊन स विमुक्तं सर्वे सिद्धि मदा कलं विष्टवर्क मदा
 कलं सर्वे सिद्धि यदा यकं ॥ विज्ञान वद विष्टवर्क मदा ॥ गयन
 ॥ ॥ अथ वक्तव्यं मनु ॥ ॥ अं सर्वे यदा यद न वजा य सर्व
 यदा यद स्वादा ॥ अथ ११ ॥ ॥ अथ वद य मनु अथ ३ ॥ ॥ अं अ
 यथा स्वादा ॥ ॥ अथान विदि म मनु अथिष्ट न जाय यकं ॥ ॥ अं अ

स्वादा॥ सिन्धुकि॥ उँड स्वादा॥ ॥ उद्यमाधन॥ ॥ उँडि स्वादा॥ ॥ वीहि
 सोधन॥ ॥ उँडुन १ स्वादा॥ ॥ अनादिस्वधन॥ उँड अः स्वादा॥ ॥
 समिधलाधनयाय॥ ॥ शत्रना॥ विदिदयथाग॥ ॥ नर २३
 माइमिमुखनूकात्रयाय॥ ॥ वरुलधमानलुक्कवजविशयः
 ॥ जाननायं न वरुलसुधसंघवक्रिमखदद्यानूअथकारणमखद

मून॥ स्वस्वमकुन॥ ॥ शुशु १ मंरुयडयाव शुशु २ विदि सिन्धुकिः
 दय॥ ॥ उँड अशुयअचमनं
 य॥ ॥ उँड अशिय स्वादा॥ ॥ यमिथदु स्वादा॥ ॥ संखलंखनरं
 य स्वादा॥ ॥ अत्रकयाग
 मय॥ ॥ उँड वजगाय स्वादा॥ ॥ वयत्रिम॥ ॥ उँड वजवृक्षिः
 ॥ ॥ उँड वजसाय स्वादा॥ ॥ यत्र

खादा॥ ॥ अथाभागे॥ ॥ उँवज्जुवरायखादा॥ ॥ उँवसि॥ ॥
 उँवज्जुयल्लयखादा॥ ॥ ॥ दयलसि॥ ॥ उँवज्जुअनिश्चर
 यखादा॥ ॥ समिकंथः ॥ उँवज्जुवाविष्टायखादा॥ ॥ २४
 डात्रंगम॥ ॥ उँवज्जुलः ॥ नायखादा॥ ॥ धित्ताखसि॥ ॥
 उँवज्जुवीजायखादा॥ ॥ वक्तम॥ ॥ उँवज्जुनखादा॥ ॥ मधुनसि॥

॥ ॥ उँवज्जुकायखादा॥ ॥ अस्थयसि॥ ॥ उँवज्जुसवेयाययसमनाय
 खादा॥ ॥ वैकंकासि॥ ॥ ॥ उँवज्जुसदकायखादा॥ ॥ अव
 सि॥ ॥ उँवज्जुसवेकाययसम
 उँवज्जुसदिदंछिगवजाय
 खादा॥ ॥ दारुलखान॥ ॥ उँवज्जुसवेयायददनवजायसवेयायदद

श्रीदाया ॥ दामल ॥ ॥ ईवजयथ्यस्वादा ॥ ॥ आरुत ॥ ॥ ईवजवद
मायस्वादा ॥ ॥ गंधा ॥ ॥ ॥ ईवजघसात्रायस्वादा ॥ ॥ नामदे
ष्टो ॥ ॥ ईवजवीक्रायस्वा
वलायस्वादा ॥ ॥ म्यागमा
गाय ॥ ॥ ईसर्वार्थाप्रिद्धियस्वादा ॥ ॥ अकापुका ॥ ॥ ईसर्व

[illegible]

यन्मभस्वादा॥ ॥ययं॥ ॥ॐसर्वेनागयसमांसायस्वादा॥ ॥दय
 दासा॥ ॥ॐआःवज्रवासा॥ ॥स्वादा॥ ॥ज्जमका॥ ॥ॐआः॥
 वज्रनामवायस्वादा॥ ॥य
 कपनीयनज्जमका॥ ॥यययिंकरस्वादा॥ ॥यमायवा
 दि॥ ॥ॐयमयमाज्जदद॥ ॥सर्वेविद्यानयसांनिकनस्वादा॥ ॥यः॥

26

दुष्टमि॥ ॥ॐआःवज्रयथस्वादा॥ ॥कमस्वान॥ ॥ॐआःवज्रयथ
 स्वादा॥ ॥यनि॥ ॥ॐआः
 ॐआःवज्रावलाकिटहं
 दावयुजा॥ ॥यथाःयथाः
 नमनसंयुजायस्वस्तिवाक॥ ॥ॐआःयदीयथादि॥ ॥दकिनाय

४ माः

जाः क्रोशति व स यन नयक आश्च सवान स मय ॥ ॥ सभा हनि तावना
 ॥ ॥ गतः समा गुल यमंडला धियति स्वमती विनिवस्य ॥ ॥ यव
 वरु मनिद वतां विहाया ॥ ॥ यो दिवा स यजा ॥ ॥ विदि स कत्र ॥ ॥ १०
 नाय द्या य म रुधा ॥ ॥ ३०
 दा ॥ ॥ स कत्र द्य य ॥ ॥ ३० ॥ ॥ गतः ये जंगमा चारु गये वथा वना स सर्व मय

ताः स खिना रुवतु सा सारु गये वथा वना
 ये जंगमा चारु गये वथा वना
 विना मत्र द्य य ॥ ॥ यमो न म
 ये वथा वना स सर्व सत्वाः सखि
 स यन मय ॥ ॥ दा स खि ॥ ॥ यानिद रु गानि त्यादि ॥ ॥ ३० ॥ ॥ द्य रु क्दा

नयनयथाशिवविमं यत्रययल्ले सखाकनियमिदृष्टादा ७ ॥ यंयाः
 यदात्रयजा गां वनादिदत्त ॥ लाग्याः घृष्टाः शुनिः ॥ स्वार्थश्च
 वयवार्थश्च साधिरुगच्छदय ॥ कुक्काप्रागमिधमिथथाकालमवसि ३०
 द्विकृष्टम ॥ सुमाकृवा ॥ आया ॥ यवायलिह्नन त्यादि ॥ कृतावसव
 सत्वाथ त्यादि ॥ ॐ आः हूं वज्रमत्रमि विमर्जन ॥ न्निक्षामविधिसमाकाः

यनावसखानदृष्टात्रमसंलवना ॥ गथायंकायात्यंका ॥ यलाश्वत्रय
 नायजुनिकांयनाका सम ॥ यमत्रयंविहाय ॥ तत्समरुनम
 त्व ॥ खद्वीजकित्रहानी ॥ मंसमयमत्रविहाय ॥ धूयासंख
 लेखनद्वयनिमाजनव ॥ जगानया ॥ मद्रुचन सिंधु ॥ जज
 मखाम नद्वदरुना ॥ यथायाम ॥ जय ॥ ॐ आः वज्रकडवज्रयता

15

10

5

0 cms.

5

10

15

१५ नम

कः विनिष्ठयं सादा ॥ धमलुन जययाय माय ज्ञानक स्वने व
 इंधिह्यं जयजयमाः ॥ ज्ञानमलुन साधय जा न ज
 द्वाय ॥ ॥ ॐ नित्य ॥ मायविधिसमाय ॥ ॐ ॥ ३१

हं नमा वक्ष्यामि ॥ यवजा खं जाय ॥ यत्र मलु लथि वृक ॥ ये ह्यस कृम
 खान मानक उक्क मा मरु ॥ न दाथ जाउ वयं नय काव खं क
 ने ॥ ॥ व. दि ॥ अद मि ॥ दृना मा जा व जी वं वृक्ष मल नंग ३२
 शु मि द्वि य दाना मयं ॥ ॥ गथ वना म क्रि थ हाव जि
 यन वद वय मा य वृक्ष म क मल व व हाव द्वि य दन मन थ या उ

ह्यस कं धर्म म क मल व व हाव ॥ ॥ धर्म मल नंग दामि
 विना गाना मय ॥ ॥ धर्म म क मल व व हाव रा ग द
 वा दिन ना ह मा उ ह्य म म ॥ म कं ॥ ॥ सं ध मल नंग द
 मि ग न र्ण मय ॥ ॥ सं ध म क मल न व हाव उ ग न
 दा का थां उ ह्य म म कं ॥ ॥ दि व थि ॥ नि था व ॥ थ म मि थ क

न॥ ॥ अहमिदं नामायावजीवयानातिथामं पुनित्विप्रमासि
 ॥ ॥ थवनामद्विथरा वजिवनवदयनात्रयादिद्या
 थंजिमयथा॥ ॥ अहमिदं नामायावजीवं अदः ३३
 लादानं पुनित्विप्रमासि ॥ ॥ थवनामद्विथरुजि
 वनवदयनात्रभवयावमुकमयनककाकमयनात्रयमय

न॥ ॥ अहमिदं नामायावजीवकामसिथाचारं पुनित्विप्रमा
 सि॥ ॥ थवनामद्विथरावजिवनवदयनात्रभवया
 मिप्रिकाकमयुजिमय
 जिर्वमृत्वावादपुनित्वि
 दावजिवनवदयनात्रभवयावमुकमयनककाकमयनात्रयमय
 ॥ अहमिदं नामायावजीवं अदः ३३
 ॥ थवनामद्विथरुजि
 वनवदयनात्रभवयावमुकमयनककाकमयनात्रयमय

दं ना मा आ व जी वं स ला भ त्रे थ म य य मा द ह नं यु कि वि त्र मा मि
 ॥ ॥ थ व ना म क्रि थ ह न जि न न व द त्र य माल ध न ह
 का य कं रु य ज जा नि रु य डि म य या ॥ मि त्र यि ॥ ॥ ३३
 न वं नि ह ल ह म न नं यं व मि ष्ठा य दं मा ध त्र यि तुं ॥
 नि श्र य न वृ ह ध म स क स त्र ह त्र द त्र ध न ग मि ष्ठ नं व

दै य त्र ल य तं ॥ आ चार्य स क या व ना ॥ ॥ स म त्वा द तं ज द मि द
 ना मा आ चार्य चा व आ क ये ना दं पु व या यि या ॥ ॥ न क
 म न या ह न जि न थ व ना म क्रि थ द त्र तु त्र स क य व त्र या
 दं तु त्र रु त्र उ रु य नि म्यं रु रि रु या द पु स न रु य मा त्र नि
 या त्र ॥ ॥ उ या धा रु या क य व ल या द ॥ ॥ स म त्वा द त्र तु डः

यार्थाय रुचान् उपाधीरुत्वा ॥ ॥ अकमनया दन उपाधीरुत्वा ॥
 यूलयात्र उपाधीरुत्वा ॥ ॥ अदमिदनामा उपाधीरुत्वा ॥
 यो नार्हं पुत्रज्योति ॥ ॥ थवनामद्रिथदाव उपाधीरुत्वा ॥
 ध्यायं ऊरि रुद्रुत्वा ॥ ॥ नरुयमात्रवत् ॥ ॥ अत्रिथि ॥ ॥ स्वयाम् ॥
 प्रलावना निला ऊरु न वरु लादा निलका मखलावर्ध स्वदाय मा

नमामि ॥ ॥ अत्रिथि ॥ ॥ अदमिदनामा यावर्द्धी ॥
 वं वद्ध सत्रहंगद्योमिध ॥ ॥ अत्रिथि ॥ ॥ अत्रिथि ॥
 गद्योमि ॥ ॥ अत्रिथि ॥ ॥ अत्रिथि ॥
 यमात्र वद्ध सत्रहंगद्योमिध ॥ ॥ अत्रिथि ॥ ॥ अत्रिथि ॥
 सलहंगद्योमिध ॥ ॥ अत्रिथि ॥ ॥ अत्रिथि ॥

थोइरुनं यावज्जीवं यादामिद्यामं पुद्गाय यादामिद्यामा नृपमिवि
 प्रमा ॥ ॥ डया थानं ॥ य नृकमनथादं हवया थंइरुनं
 वरुसक सप्रदायाव नृ जिन्नवदप्रयमात्र यादिस्या ॥ ३७
 यममव यादिका यमनं वरुनं ममव आवनलि ॥ ॥
 सिध्दतययक ॥ नृवं मरुमिदनामा यावज्जीवं यादामिद्यामं व

प्रमनं सिद्धाय दं सप्रदद ॥ ॥ निश्चयनं थवनामक्रिथदं जिन्न
 नवदप्रयमाल आवनं लि स्या यमयला ॥ सिद्धाय दयम
 नरुयमाल ॥ ॥ नृवं मवाहं यथमनां गनकत्वा माया
 एमदन्ता सिद्धा अनृ मिथ्य अनृ विविधन अनृ कना
 मि ॥ ॥ निश्चयनं हयाया अनृ वरुददाकाया वक्रिथं सनं नृ

प्रविशद्वावतय ल अक्षरि सा जादिन आवत लि च न मा द न मा
प्रसिध्द न ध्या ॥ ॥ एवं मूद मिदु नामा या व ऊी वं म
दका दानं वे प्रम तं ह्य म म न प्रसिद्धा य दं समादि यामि ॥ ११
॥ निष्ठय नं थ व ता म क्रि थ दान जि व न व द य का प्र
म व या व शु क म ग न क का क म ये या ध क सि ध न या र्थ ता ॥ ॥

अद मिदु नामा या व ऊी वं म व क्त च य वे प्र म णं सि द्धा य दं म म
द ॥ ॥ जि न ना म क्रि थ दं जि न न व द य का ल अ ना
या लि श य म व सि ध्या य द य म न श य मा ल ॥ ॥ अद
मिदु म म ना य का ल द य ना मा या व ऊी वं मृ षा वा द वे ल
म णं सि द्धा य दं समादि यामि ॥ ॥ जि ना म क्रि थ द व जि न

नवद्वयमालम्बसहस्रकलायमयला शिष्टाद्यदप्रसन्नस्य
 ल॥ ॥ अदमिदुमम कनामायकालन नामायाय
 जीवं सनामल्य मद्यद प्रमातदस्यनं वेनमद्यमन ॥ २
 लक्षिकायदसमादिया मि॥ ॥ थवनामद्रिथकाव
 दिवतवद्वयमाल्थनकायक आदिनंशयडिमयना॥

दुःखार्थसंधाः प्रार्थसंधवर्जध्वयामि
 कृत्वा न प्रदिनं अधिष्टात् नयादावाव
 याद शास्त्रि प्रार्थार्थसन्न संघदाकायनं
 न॥ ॥ मासिक्ता राज नादि स्थितिलिका मधि
 मासिवाधि॥ ॥ अमासिक्ता राजन आदिनं स्थितिलिका मधि

सुठयाठजादिन राजन नयथा म जिकविहना ॥ म
 दनं उवा आया अहमिहं ॥ अमनायकाल ए नामाड
 अथयथासित ॥ थथार ॥ एकमनयाह राधि
 थदनाप्रादथमत्र उवाह ॥ थानअधिष्ठा
 ना ॥ ॐ मां सिक्ता राजनं कृत्तिकां म

कमनयाह राधि अवाथ थवना मक्ति थदा न अवाथुन मा
 यादव यमनेह मना ॥ ॐ मां सिक्ता राजनं कृत्तिका
 धिष्टिष्ठुत थाममवाह ॥ नं अवाथ अहमिहं अमनायक
 लण नामा अवाथ अर्थव ॥ यामि ॐ मां विविलिका अधिष्ठा
 धिष्ठुत ॥ स्वयाल ॥ ॥ ममा कृत्तिकादिने अधिष्ठुत यादावविह

मध्याध्यामि ल्दं पातुं अथि काडनं काडनयत्रि कागय अधिष्टि षुनु ॥
 ॥ एक मनयादं काडि आचार्ये सकथननामक्तिथदावद
 आचार्य अधिष्टुनयादाव
 न अधिष्टुनयादाव विदुः
 दमिदं जमनायकालया नाम आचार्य मध्याध्यामि ॥ ॥ अमथु

विधि यन पुन कनामि॥	॥ धन क्रिया प्र सिध्य नंद ॥ ११ ॥
यो इह नृ वेद द्वा कायां द	मिष्य क्रिथं स्य न क्रिथं विधानया
यं क्रिथं यं बल यं इयं॥	॥ यागु विव नृ न क ॥ वद धर्म
संयम उल विमर्जन ॥	॥ इव म उल विव क स्वान दा द्वा
प्रकायक उव य विव सदि व क न	हा थ जा उ य न य का व गु व ड

यार्था संघसक खाननानक ॥ ॥ समन्वादनं आचार्ये अदमिदं
 अनूनायकात्र एनामर
 प्रसंघस्य विश्वास संघः
 ॥ एकमनयाह लाष्टि आ
 सक जिनरुहा शुभाचिवल संघस्य विश्वास सं संघला कायान

आचार्ये मध्ययामि ॥ ॥ दं विवः
 यत्रिका मय अयिष्टि हृदु ॥
 वाय थननामद्रिथदात्र आचार्ये

११

अयिष्टुतयादात्र विदुन ॥ ॥ गथा समन्वादनं आचार्ये अदम
 मिदं अमनायकात्र एना
 थथ एकचिरुयाह ला
 जिननवदत्रयतात्र आत्र
 न नाडकूलननयागविदुन ॥ ॥ गथेव समन्वादनं आचार्ये अ

नामा आचार्ये अर्थयामि ॥
 द्वि आचार्ये थननामद्रिथदात्र
 वाय सक जिनरुहा शुभाचिव

हसिन्दुनामा आचार्य अध्यायानि ॐ दं चिद्वत्तं वा ऊकल गमना
 य अधिष्ठिष्ठु ॥ ॥ थथेह निश्चयनं एकमनयाहा
 न लादि आचार्य थवना मक्रिडात्र अमाचिद्वत्त जिगविष्ट १६
 हन अमनगत्रसु वनः याग अधिष्ठानयाहं यमेन रुस
 नः ॥ ॥ समवाहय आचार्य अहसिन्दु अमनायकाल एनामा आचार्य

लयहना ॥ ॥ गथेव समवाहय रुहदना अहसिन्दुनामा ॐ
 दं चिद्वत्तं अमनगत्रनि गमयलीयकत्र गमनाय धात्र
 यामि ॥ ॥ थथेनिश्चयनं एकमनयाह लादि आचार्य
 यमेन नामक्रिथहाव अमाचिद्वत्त वलथ ॥ ॥ सम
 वाहय रुहदना अहसिन्दुनामा ॐ मायाग अधिष्ठानं हिक्का

जनं राजनघत्रिणागमय धात्रयामि ॥ एकमनयाह आवाथ
 यमखन सकलनामदि यदभूमासि जयघात आदिनं रा
 जनयाग जिघ्रलया धर ना ॥ तथा समवाहवत्तु हद ११
 का अहमिदनामा ॐ सं सिक्ता राजनं कृति कां धात्रयामि ॥
 ॥ अमथं एकमनयाह युव आदिन सकलं धननामदि यदध्वर

मंडलविनय

समाधिखर्वेय विमर्किखर्वेय विमर्कि नयसखर्वेय पचिय चय ॥ वि
 नयि ॥ ० ॥ ॐ नित्यवर्ग्ये दहविधि ॥ ॐ ॥ धनं वि द्वा स्य यत्र स
 रायक कुं धात्र स दूध दहवत्तु जानकं वाचयात्र का मन ह्याचकं धुय
 वदावन खानना न आसीवाग मंडलविमर्केन सद्य नमयकं दहि
 नायजा ॐ विमर्केन ॥ ॐ नित्यवर्ग्ये दहविधि ॥ ॐ ॥ चित्रवकागयान

॥ याणां न दद्यात् न दद्यात् न दद्यात् ॥ ॥ निश्चयं न दद्यात् ॥
 निश्चयं न दद्यात् न दद्यात् न दद्यात् ॥ ॥ निश्चयं न दद्यात् ॥
 न दद्यात् न दद्यात् न दद्यात् न दद्यात् ॥ ॥ निश्चयं न दद्यात् ॥
 न दद्यात् न दद्यात् न दद्यात् न दद्यात् ॥ ॥ निश्चयं न दद्यात् ॥

सदतमव ॥ दाजासनसंखानमव ॥ आसन्त्यमयुः शिखायद
विदुन्ययुः ॥ ॥ अद ॥ मिदं मुननायकात्रहं नामाया
वडीव प्रक ॥ अजनव ॥ प्रमणां शिखायदं समादयामि
॥ ॥ थ ॥ निशद ॥ दिवनवहनयतात्र मय
महप्र ॥ मिखायदविदुन्य

मा अरु ॥ यावद्भीव जात न
 क्षमा न श ॥ मा दया मि ॥ ॥ य न ॥
 दान जिन ॥ त्रय का ॥ न व क्षा य कि या द का यं म य या ॥
 क्षा म न र ॥ शि क्षा य द ॥ वि क न डि ग ॥ ति त्र यि ॥ ॥ अ न
 ना द द म म ॥ ग न रं वां मा यो णं म ह का मि क्षा ॥ अ न मि क्षा अ न

(Faint, mostly illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the paper.)

5

0 cms.

5

10

15